आभार

मेरे इस शोध कार्य में गुरूओं के मार्गदर्शन और मित्रों का अविस्मणीय योगदान रहा। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को पूर्ण करने में अनेक रचनाकार विद्वानों का भी सहयोग प्राप्त होता रहा है। मैं उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त कर ऋण मुक्त नहीं होना चाहता बल्कि इस योग में उनकी महत्ता को प्रतिष्ठित करना चाहता हूँ। इस शोध विषय वस्तु के सबसे महत्वपुर्ण स्त्रोत व्यक्ति स्वं. श्रीराम ताम्रकार का ऋणी रहुगॉ। शोध कार्य में आने वाली समस्याओं दुर कर शोध के लिए के प्रेरित व र्निदेशित करने वाली परम् श्रद्धेय डॉ. रचना गंगवार मैडम का मैं सदैव आभारी रहूगॉ। इनके कुशल निर्देशन में मेरी शोध यात्रा बिना किसी व्यवधान के पुर्ण हुई। इनके विद्वतापूर्ण मार्गदर्शन और स्नेह पुर्ण व्यवहार के फलस्वरूप ही मैं यह शोध कार्य महत्वपुर्ण बन पड़ा हैं। इन्होंने विभागीय व्यस्तताओं के बावजुद मुझे समय व निर्देशन देकर उपकृत किया है। विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ0 गोपाल सिंह के अनमोल वक्तव्य मेरे शोध के लिए मजबुत आधार साबित हुआ है। इनके मार्गदर्शन से मेरा यह शोध कार्य पुर्ण हुआ हैं। डॉ0 गोविन्द जी पाण्डेय एवं डॉ0 महेन्द्र कुमार पाढ़ी सर ने समय–समय पर अपना मार्गदर्शन दिया जो मेरे शोध के लिए काफ़ी महत्वपुर्ण साबित हुआ।

पुस्तकालयाध्यक्ष एवं शासकीय विभागों में जिला जनसंपर्क कार्यालय बड़वानी के सहयोग के ने शोध विवेचना करने में हर संभव योगदान दिया है। इस सहयोग के बिना शोध कार्य पुर्ण करना असम्भव सा था। मैं उन सभी पुस्तकाल्याध्यक्षों और शासकीय विभागों के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ जिनके सहयोग के बिना शोध कार्य पूर्ण नहीं हो सकता था। धन्यवाद ज्ञापित करता हुँ जिन्होंने शोध कार्य के लिए सदा प्रेरित किया। इनमें जीजु श्री ओंकारलाल मंडलोई, परम शुभचिंतक भैय्या श्री महेन्द्र सिंह अलावा श्री शैलेन्द्र सिंह अलावा, दीदी श्रीमती शोभाग्यवती मंडलोई, भाई साहब श्री उमेश वास्कले व मेरी धर्मपत्नि श्रीमती दिपीका वास्कले का मैं आभारी हूं जिन्होने शोध कार्य पूर्ण करने में हर सम्भव सहयोग किया।

मैं जनसम्पर्क संचालनालय भोपाल के सेवानिवृत्त अपर संचालक श्री सुरेश तिवारी जी का भी आभारी हूं जिन्होंने नौकरी के साथ–साथ पी–एच.डी. करने के लिए मुझे अनुमति प्रदान की। मैं शोधार्थी मित्र गुरूशरण लाल व सहायक अनुसंधान श्री एलएन पयोधि अधिकारी आदिम जाति

अनुसंधान एवं विकास संस्था भोपाल का भी तहेदिल से आभारी हूं जिन्होंने समय–समय पर मार्गदर्शन व सुझाव प्रदान करते रहे। मैं प. निमाड़ बड़वानी जिले में निवासरत आदिवासी लोगों का अभिनन्दन करता हूं और धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने समय निकालकर मुझे बातचीत करने का अवसर प्रदान किया। उनसे ऑकड़ों के संकलन में सहायता मिली। मैं उनके धैर्य को सलाम करता हूं। मैं अपने अभिन्न साथियों तेर सिंह बर्मन, अरविन्द सोंलकी, सुनिल सोलंकी, पवन सोंलकी, गणपत डावर, राहुल वास्कले, नरसिंह बर्मन का दिल से आभारी हूं जिन्होंने मेरा सहभागी अवलोकन विधि में उत्साह के साथ पूर्ण सहयोग का योगदान दिया। मैं अपने साथी मित्र श्री स्वतंत्र जोशी का शुक्रगुजार हुँ जिन्हाने अध्ययन सामग्री को कम्पोज करने में मेरा हाथ बंटाया।

शोधार्थी

पुष्पेन्द्र वास्कले